



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 234]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अक्तूबर 7, 2004/आश्विन 15, 1926

No. 234]

NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 7, 2004/ASVINA 15, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क निदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 अक्तूबर, 2004

अंतिम जांच परिणाम

विषय : यूरोपीय संघ, चीनी ताइपेई तथा यू एस ए के मूल के अथवा वहां से निर्यातित साइक्लोहेक्सानोन के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच ।

सं० 14/17/2003-डीजीएडी- 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 और उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण एवं क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए:-

क. प्रक्रिया

1. नीचे दी गयी प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी, (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा जाएगा) को उपर्युक्त नियमावली के अधीन घरेलू उद्योग की ओर से मै0 गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लि0 (जी एस एफ सी), बडोदरा (जिसे इसके बाद याचिकाकर्ता कहा जाएगा) द्वारा एक लिखित याचिका प्राप्त हुई है जिसमें यूरोपीय संघ, चीनी ताइपेई तथा यू एस ए (जिन्हें इसके बाद संबद्ध देश कहा जाएगा) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित साइक्लोहेक्सानोन के पाटन का आरोप लगाया गया था । याचिकाकर्ता द्वारा दायर आवेदन पत्र की प्रारंभिक जांच में कतिपय त्रुटियों का पता चला था, जिन्हें बाद में याचिकाकर्ता द्वारा दूर कर दिया गया था । इसके पश्चात याचिका को समुचित ढंग से प्रलेखित माना गया था ।
- (ii) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने से पहले, याचिकाकर्ता द्वारा दायर पूर्ण प्रलेखित आवेदन की प्राप्ति के विषय में भारत में स्थित संबद्ध देशों के सभी दूतावासों/उच्च आयोगों को अधिसूचित किया ।

- (iii) प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से साइक्लोहेक्सानोन के आयातों से संबंधित पाटनरोधी कार्यवाहियों का आरंभ करते हुए दिनांक 8 अक्टूबर, 2003 में भारत के राजपत्र, असाधारण में सार्वजनिक सूचना प्रकाशित की ।
- (iv) प्राधिकारी ने उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, औद्योगिक संस्थाओं तथा शिकायतकर्ता को भेजी तथा नियम 6(2) के अनुसार पत्र जारी होने के 40 दिनों के अंदर अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया ।
- (v) उपर्युक्त नियम 6 के उप नियम (3) के अनुसार, प्राधिकारी ने याचिका की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों तथा भारत में स्थित संबद्ध देशों/क्षेत्रों के दूतावासों/उच्च आयोगों को भेजी है । संबद्ध देशों के किसी भी उत्पादक एवं निर्यातक ने आवेदन का उत्तर नहीं दिया है ।
- (vi) प्राधिकारी ने संबद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी । किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली एवं अधिसूचना के संबंध में किसी प्रकार का उत्तर अथवा सूचना प्रस्तुत नहीं की है ।
- (vii) नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत के बारे में सूचना दी गयी और उनसे यह अनुरोध किया गया कि वे अपने देश/क्षेत्र के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का जवाब निर्धारित समय के भीतर देने की सलाह दें । नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों को भेजे गए पत्र, घरेलू उद्योग द्वारा दायर किए गए आवेदन तथा प्रश्नावली की एक प्रति संबद्ध देशों/क्षेत्रों के दूतावासों को भी भेजी गयी ।
- (viii) नियम 6(4) के अनुसार बड़ी संख्या में आयातकों को प्रश्नावली भेजी गयी । संबद्ध वस्तु के किसी भी आयातक तथा उपयोक्ता ने प्रश्नावली तथा अधिसूचना के संबंध में कोई उत्तर दायर नहीं किया है ।
- (ix) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों को सार्वजनिक फाइल के रूप में हितबद्ध पार्टियों द्वारा जांच के लिए खुला रखा ।
- (x) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को 25 मई, 2004 को अपने विचार मौखिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया । मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने वाली सभी पार्टियों से अपने विचारों को लिखित रूप में दायर करने का अनुरोध किया गया । पार्टियों को विरोधी पार्टियों द्वारा व्यक्त विचारों की प्रतियां प्राप्त करने एवं खंडन, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने की सलाह दी गयी थी । मै0 बी ए एस एफ के अतिरिक्त किसी भी हितबद्ध पार्टी ने उत्तर दायर नहीं किया है । मै0 बी ए एस एफ ने कहा है कि उन्होंने जांच की अवधि के दौरान किसी सामग्री का निर्यात नहीं किया है तथा इसके अतिरिक्त उन्होंने न्यू शिपर समीक्षा किए जाने हेतु अनुरोध किया । प्राधिकारी ने उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का घरेलू सत्यापन एवं निर्यातकों का सत्यापन किया था । प्राधिकारी ने पाटन का निर्धारण करने और परिणामी क्षति के संबंध में अंतिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गयी सभी सूचना मांगी और उनका सत्यापन किया । प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गयी सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच

की । उपर्युक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधार का खुलासा 10 सितम्बर, 2004 को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर मिली टिप्पणियों पर भी अंतिम निष्कर्षों में विधिवत विचार किया जाएगा ।

- (xi) **** यह चिट्ठन इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर दी गयी सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे गोपनीय ही माने जाने का द्योतक है ।
- (xii) पाटन की जांच एवं क्षति के लिए 1 अप्रैल, 2002 से 30 जून, 2003 तक की अवधि शामिल है (जिसे जांच की अवधि अथवा पी ओ आई कहा गया है) क्षति के विश्लेषण के संदर्भ में रुझानों की जांच 1999-2000 से जांच अवधि के अंत तक की अवधि शामिल है । आयात आंकड़ों की जांच संबद्ध देशों और संबद्ध देश से इतर देशों के आयातों के लिए डी जी सी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदेवार आंकड़ों से की गयी है ।
- (xiii) उनके द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों का प्राधिकारी द्वारा घरेलू सत्यापन किया गया । प्राधिकारी ने पाटन के निर्धारण और इसके परिणामस्वरूप हुई क्षति के संबंध में अंतिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ आवश्यक सीमा तक सूचना मांगी और उसका सत्यापन किया । प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गयी सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की । उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधार का खुलासा ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर मिली टिप्पणियों पर भी अंतिम जांच परिणामों में विधिवत विचार किया जाएगा ।
- (xiv) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर आम तौर से स्वीकार्य लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत और निर्माण एवं बिक्री लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत को निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का विश्लेषण भी किया गया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- (xv) जांच शुरूआत करने संबंधी नोटिस की प्रतियाँ व्यापक परिचालन हेतु फिक्की, सी आई आई, एसोचेम इत्यादि को भी भेजी गयी थी ।

ख. विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद ताईवान, ई यू तथा यू एस ए के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित साइक्लोहेक्सानोन है, जिसका रासायनिक फार्मूला C_6H_{10} है । साइक्लोहेक्सानोन का विनिर्माण बेन्जीन के द्वारा किया जाता है । एडिपिक एसिड के उत्पादन एवं नायलॉन 6 के विनिर्माण में यह एक मध्यवर्ती के रूप में कार्य करता है । यह प्रमुखतः माइल्ड स्टील ड्रमों में बेचा जाता है अथवा माइल्ड स्टील रोड टैंकरों में उपलब्ध कराया जाता है ।

इसका प्रयोग मुख्यत एक मध्यवर्ती के रूप में कैप्रोलैक्टम के उत्पादन एवं नायलॉन 6 के विनिर्माण में किया जाता है । इसे रोमनों विशेष रूप से नाइट्रोसेल्यूलोस अथवा विनाइल क्लोराइड

पॉलिमर, पॉलिविनाइल क्लोराइड तथा मेथाक्रायलेट ईस्टर पॉलिमर युक्त के लिए विलायक तथा विरलक के रूप में पिस्टन टाइप एयरक्राफ्ट लुब्रिकेशन के लिए एक गाढ़े विलायक तथा डी डी टी तथा कार्बनिक फोस्फोरस कीटनाशक एवं कृमिनाशकों के लिए विलायक के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। घरेलू उद्योग के दावों का खंडन करने के लिए किसी भी हितबद्ध पार्टी द्वारा कोई तर्क नहीं दिया गया है।

साइक्लोहेक्सानोन को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के तहत तथा सुमेलीकृत प्रणाली पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वर्गीकरण में उपशीर्ष सं० 29142200 के तहत वर्गीकृत किया गया है।

ग. समान वस्तु

3. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उसके द्वारा उत्पादित माल संबद्ध देशों/क्षेत्रों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित माल के समान माल है। याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों/क्षेत्रों से निर्यातित माल में कोई खास अंतर नहीं है। याचिकाकर्ता का यह दावा है कि वे दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। अतः वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ, याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित वस्तु को उपर्युक्त नियमों के भीतर संबद्ध देशों/क्षेत्रों से आयातित वस्तु के समान वस्तु माना जा रहा है।

याचिकाकर्ता ने विभिन्न उपभोक्ताओं को बिक्री साक्ष्य के रूप में बीजकों की प्रतियां उपलब्ध कराई हैं। याचिकाकर्ता ने गौण स्रोतों से प्राप्त आयात संबंधी सूचना भी उपलब्ध कराई है, जिसमें आयातक का नाम दर्शाया गया है। इसमें यह दर्शाया गया है कि आयात उन्हीं पार्टियों द्वारा किए जा रहे हैं, जो घरेलू उद्योग से सामग्री खरीद रहे हैं।

इस संबंध में किसी भी विरोधी हितबद्ध पार्टी द्वारा कोई तर्क नहीं दिया गया है। विस्तृत जांच के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित साइक्लोहेक्सानोन के गुण-दोष संबंधित देशों से आयातित तथा निर्यातक देशों के बाजारों में बेचे जाने वाले साइक्लोहेक्सानोन से मिलते-जुलते हैं। उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी का विचार है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एवं संबद्ध देशों से आयातित तथा उनमें बेचे जाने वाले साइक्लोहेक्सानोन नियम के अर्थ के भीतर समान वस्तु हैं।

घ. घरेलू उद्योग

4. यह याचिका मै० गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स एवं केमिकल्स लि० वड़ोदरा, गुजरात द्वारा दायर की गयी है। प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि याचिकाकर्ता भारत में संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादक हैं जिसका भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है और याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली ने नियम 5(3)(क) के अनुसार आवेदन दायर करने के आधार संबंधी मानदण्ड को पूरा करते होंगे।

ड. न्यूनतम सीमा

5. जहाँ तक यह निर्धारित करने का संबंध है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात न्यूनतम सीमा से अधिक रहे हैं, प्राधिकारी ने डी जी सी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए गए संबद्ध देशों से सौदेवार आंकड़ों का संदर्भ लिया है। आंकड़ों की जांच करने के बाद प्राधिकारी यह मानते हैं कि सभी संबद्ध देशों से हुए आयात उनकी मात्रा के संबंध में न्यूनतम सीमा से अधिक हैं।

च. पाटन

6. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 क(1) 1 के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:-

1. सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, या

2. जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की बिक्री न हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना नहीं की जा सकती, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा:

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी तीसरी उचित देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु की उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत:

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा।

7. प्राधिकारी ने धारा 9 क (1)(ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजीं। किसी भी निर्यातक ने निर्यातकों को भेजे गए पत्र एवं निर्यातक प्रश्नावली में दी गयी विधि एवं पद्धति में प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। तथ्यतः इस जांच में किसी निर्यातक ने कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया है।

च. 1 यू एस ए, ई यू तथा चीनी ताइपेई

(क) सहयोग

8. किसी भी निर्यातक ने निर्यातकों को भेजे गए पत्र एवं निर्यातक प्रश्नावली में दी गयी विधि एवं पद्धति में प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। तथ्यतः इस जांच में किसी निर्यातक ने कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया है। मै0 बी ए एस एफ ने कहा है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान किसी सामग्री का निर्यात नहीं किया है तथा न्यू शिपर जांच हेतु अनुरोध किया है। “जितनी जल्दी संभव हो सके, जांच की शुरुआत के पश्चात जांचकर्ता प्राधिकारी किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा मांगी गयी जानकारी को विस्तारपूर्वक विनिर्दिष्ट करेगा तथा सूचना को उसी पद्धति में प्रस्तुत करेगा जिस प्रारूप का हितबद्ध पार्टी ने अपने उत्तर में उल्लेख किया है। प्राधिकारी यह भी सुनिश्चित करेगा कि पार्टी इस तथ्य से अवगत है कि यदि समुचित समय के भीतर सूचना उपलब्ध नहीं कराई जाती है तो प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा जांच की शुरुआत किए जाने के लिए दिए गए आवेदन में दी गयी जानकारी सहित उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र होंगे।”

ख. सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत:

9. साइक्लोहेक्सानोन की कीमतें समय-समय पर टेक्नॉन द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित पत्रिका “पॉलिएमाइड्स एंड इंटरमीडिएट्स” में प्रकाशित की जाती है। याचिकाकर्ता ने ई यू तथा ताईवान के मामले में अपने सामान्य मूल्य का निर्धारण इस पत्रिका में दी गयी कीमतों के आधार पर किया है। उद्योग की ओर से कहा गया है कि उन्होंने संबद्ध देशों के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की कीमतों के साक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास किया था। किसी प्रकाशित पत्रिका के माध्यम से कीमत संबंधी साक्ष्य प्राप्त करने हेतु भी प्रयास किए गए थे। तथापि यह कहा गया है कि चूंकि ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उत्पाद का व्यापक व्यापार किया जाता है (बेंजीन तथा कैप्रोलैक्टम आदि के विपरीत) इसलिए वे संबद्ध देशों के घरेलू बाजार में बेची जाने वाली संबद्ध वस्तु की कीमत के संबंध में कोई साक्ष्य नहीं जुटा पाए हैं। प्रत्येक संबद्ध देश से सभी निर्यातकों के असहयोग के मद्देनजर, निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर कार्यवाई करने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं था। प्राधिकारी ने साइक्लोहेक्सानोन का कीमत निर्धारण, ई यू तथा चीनी ताइपेई के लिए इस पत्रिका में सूचित संबद्ध वस्तु की कीमतों के आधार पर किया है, जहां इस पत्रिका में उक्त कीमतें ई यू एवं एशिया के लिए दी गयी हैं। यू एस ए के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन पत्रिका में यू एस ए के लिए दी गयी साइक्लोहेक्सानोन की कीमतों के आधार पर किया गया है। नोट किया गया है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावे का निर्यातक अथवा अन्य हितबद्ध पार्टी द्वारा विरोध भी नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के अनुसार पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अंतर्गत उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसलिए देश अथवा उद्गम स्थान में उत्पादन की अनुमानित लागतों और बिक्रियों, प्रशासनिक तथा सामान्य खर्चों और उचित समायोजन करने के बाद उचित लाभ से संबंधित उपलब्ध सूचना को निर्यातक के लिए संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए आधार के रूप में ली गयी है। कारखाना बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण डी जी सी आई एस से उपलब्ध हुए आंकड़ों और उपलब्ध तथ्यों के अनुसार किए गए समायोजनों से किया गया है।

(ग) तुलना

10. कारखाना बाह्य स्तर पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना करने के प्रयोजनार्थ परिवहन, बीमा, संभलाई और अन्य लागतों के संबंध में जहां उचित था, यथोचित अनुमति दी गयी है।

(घ) पाटन मार्जिन

11. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के नियम 6(iv) के अनुसार पाटन मार्जिन कारखाना बाह्य स्तर पर भारित औसत निर्यात कीमत के साथ परिगणित सामान्य मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तु के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण कर लिया गया है जो निम्नानुसार है।

	एनवी एक्स	ईपी एक्स	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
	यूएस \$	यूएस \$	यूएस 4	%
चीनी ताइपेई	****	****	****	16.35
ईयू	****	****	****	21.56
यूएसए	****	****	****	56.06

छ. क्षति

(क) घरेलू खपत/मांग

12. घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद की घरेलू खपत/मांग का आकलन करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू बाजार में सकल आयातों के साथ घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा को जोड़ा है। यह नोट किया गया है कि इस आधार पर घरेलू बाजार में सम्बद्ध वस्तु की घरेलू मांग अथवा खपत 1999-2000 में 21007 मी० टन से घटकर 15228 मी० टन हो गई। इसमें 28% की गिरावट प्रदर्शित हुई।

	1999-00	2000-01	2001-02	जाँच अवधि वार्षिकीकृत
व्यापार माँग	21007	15745	17872	15228
सूचीबद्ध	100.00	74.95	85.08	72.49
आबद्ध माँग सहित माँग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100.00	94.15	90.59	88.27

13. संबंधित आयातों के प्रभावों का समग्र आकलन

- प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.3 और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 के अनुसार संबद्ध देश के मूल की संबद्ध वस्तुओं के आयातों का समग्र रूप से आकलन किया जाना चाहिए।
- संबद्ध देशों में से प्रत्येक से आयातों के संबंध में निर्धारित किया गया पाटन मार्जिन, पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 5.8 और पाटनरोधी नियमावली के नियम 14 में यथा परिभाषित निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक था और इन देशों में से प्रत्येक से पाटित आयातों की मात्रा नगण्य नहीं थी।
- घरेलू उत्पाद और विभिन्न देशों के उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किया गया उत्पाद समान वस्तुएं हैं; और आयातित-उत्पाद एवं घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है और किया जा रहा है। विभिन्न देशों के आयातकों संबंधी सौदे-वार सूचना तथा घरेलू उद्योग के बिक्री बीजकों से यह प्रदर्शित होता है कि ऐसे अनेक

पक्षकार हैं जिन्होंने घरेलू उद्योग से खरीद एवं संबद्ध देशों से आयातों दोनों का प्रयोग किया है। आगे यह भी नोट किया गया है कि विभिन्न देशों से आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तु उसी बाजार में प्रतिस्पर्धा करती है। इसके अलावा, यह भी नोट किया गया है कि संबद्ध देशों के विभिन्न उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किए गए उत्पादों को भारत में समान अवधि के दौरान तुलनीय बिक्री श्रृंखलाओं और समान वाणिज्यिक स्थितियों के अंतर्गत बेचा जा रहा है। प्रत्येक संबद्ध देश के मामले में कीमत कटौती सकारात्मक है।

- (iv) उपर्युक्त के आलोक में प्राधिकारी ने यह माना है कि प्रत्येक संबद्ध देश से हुए आयातों के संबंध में पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.3 और नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध-II के पैरा iii के अनुसार मापवृद्ध पूर्ण होते हैं और इसलिए इन देशों से हुए आयातों को क्षति निर्धारणों हेतु जोड़ा जाना चाहिए।

संबद्ध देशों की मूलता वाले आयात

मात्रा

14. क्षति अवधि के दौरान घरेलू बाजार में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों की मात्रा में 9% की वृद्धि हुई। 1999-2000 में संबद्ध देश से 4843 मी. टन का आयात हुआ था जो कि 2000-2001 में घटकर 3430 मी. टन हो गया। वर्ष 2001-2002 में आयात बढ़कर 5093 मी0 टन हो गया जो कि जाँच अवधि के दौरान और बढ़कर 5290 मी. टन हो गया। पाटित आयातों की मात्रा में वार्षिकीकृत आधार पर 1999-2000 से 9% की वृद्धि प्रदर्शित होती है।

(मी0 टन)	1999-00	2000-01	2001-02	जाँच अवधि वार्षिकीकृत
आयातों में बाजार हिस्सा				
ईयू	3947	3430	3799	2788
यूएसए	0	0	194	557
चीनी ताइपेई	896	0	1100	1945
कुल	4843	3430	5093	5290
पाटित आयातों की मात्रा में परिवर्तन		-1413	1663	197
अन्य आयात	5941	550	1094	765
अन्य आयातों की मात्रा में परिवर्तन		-5391	544	-329

कुल आयातों में संबद्ध देशों का हिस्सा

15. जाँच अवधि में कुल आयातों में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के हिस्से में 42.46% की वृद्धि हुई। कुल आयातों में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा 1999-2000 में 44.91% से बढ़कर

जाँच अवधि के दौरान 87.37% हो गया। अतः यह नोट किया गया है कि कुल आयातों में से पाटित आयातों के हिस्से में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

	1999-00	2000-01	2001-02	जाँच अवधि वार्षिकीकृत
आयातों में बाजार हिस्सा				
ईयू	3947	3430	3799	2788
हिस्सा	36.60	86.17	61.41	46.05
यूएसए	0	0	194	557
हिस्सा	0	0	3.13	9.20
चीनी ताइपेई	896	0	1100	1945
हिस्सा	8.31	0	17.78	32.12
कुल आयातों में संबद्ध देश से पाटित आयातों का बाजार हिस्सा	44.91	86.18	82.32	87.37
कुल आयातों में अन्य देशों का बाजार हिस्सा	55.09	13.82	17.68	12.63

कुल माँग में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा

16. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तु की माँग में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के हिस्से की भी जाँच की है। प्राधिकारी ने यह पाया है कि व्यापार माँग में संबद्ध देशों का हिस्सा जो कि 1999-2000 में 23.03% था जाँच अवधि के दौरान बढ़कर 34.74% हो गया।

माँग में बाजार हिस्सा	1999-00	2000-01	2001-02	जाँच अवधि
घरेलू उद्योग	48.66	74.72	65.39	60.24
आयात-संबद्ध देश	23.06	21.78	28.49	34.74
आयात-अन्य देश के बाजार हिस्से में परिवर्तन	28.28	3.49	6.12	5.02
पाटित आयात		-1.28	6.71	6.25
अन्य आयात		-24.79	2.63	-1.1
घरेलू उद्योग		26.06	-9.33	-5.15

भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा

17. यह पाया गया है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों में घरेलू उद्योग के उत्पादन की तुलना में वृद्धि हुई। इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने एक बार आबद्ध उपभोग को छोड़कर और उसके बाद

आबद्ध उपभोग सहित उत्पादन पर विचार किया है। इस संबंध में कोई एक समान प्रवृत्ति प्रतीत नहीं होती है और यद्यपि भारत में निवल उत्पादन की तुलना में पाटित आयातों में वृद्धि हुई है, तथापि जहाँ आबद्ध उपभोग को भी शामिल किया गया है, वहाँ मामूली वृद्धि हुई है।

	1999-00	2000-01	2001-02	जाँच अवधि वार्षिकीकृत
*निवल उत्पादन पर विचार	****	****	****	****
वर्ष-वार परिवर्तन		-17.61	14.34	13.62
* कुल उत्पादन पर विचार	****	****	****	****
वर्ष-वार परिवर्तन		-2.16	2.94	0.45

*निवल में आबद्ध उपभोग शामिल नहीं है और *कुल में आबद्ध उपभोग शामिल हैं।

उपरोक्त जाँच के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि निवल तथा कुल उत्पादन के हिस्सों में पिछले वर्ष की तुलना में जाँच अवधि के दौरान संबद्ध देशों के पाटित आयातों के बाजार हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है।

आयात कीमत का क्रम विकास

18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयात कीमतों में कोई समनुरूप प्रवृत्ति नहीं थी। आयात कीमतों में 2000-01 में पिछले वर्ष की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई और उसके बाद 2001-02 में उनमें गिरावट आई। इसके पश्चात् कीमतों में वृद्धि हुई।

	1999-00	2000-01	2001-02	जाँच अवधि वार्षिकीकृत
संबद्ध देशों की सीआईएफ निर्यात कीमत (भारित औसत)	26731	38069	30972	34128
पिछले वर्ष की तुलना में % परिवर्तन		42.41	-1864	10.19

प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तथ्य के मद्देनजर कि निवेश कीमतों में अत्यधिक कमी बेशी होती रहती है, संबद्ध वस्तु की कीमतों में अत्यधिक कमी बेशी होती है।

कीमत कटौती

19. संबंधित उत्पाद की कीमतों की तुलना व्यापार के समान स्तर पर निर्यातक उत्पादकों और घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत, असंबद्ध उपभोक्ताओं को सभी छूटों एवं करों के निवल योग के बीच की गई थी। घरेलू उद्योग की कीमतें कारखाना द्वार स्तर पर निर्धारित की गई थीं। संबंधित संबद्ध देशों की सीआईएफ कीमतों को आयात के बाद मूलभूत सीमाशुल्कों के लिए समायोजित किया गया था। इस तुलना से यह पता लगा था कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों के मूल की संबद्ध वस्तुओं को घरेलू बाजार में ऐसी कीमतों पर बेचा गया था जिनसे घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमतों के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है। तथापि, इस मामले में कीमत कटौती के मार्जिन को महत्वपूर्ण नहीं माना गया है।

रू. प्रति मी० टन	पहुँच मूल्य	कटौती की मात्रा	कटौती %
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	****		
ताइवान	****	****	5-10%
ईयू	****	****	1-5%
यूएसए	****	****	10-15%
सभी संबद्ध देश	****	****	4-6%

कम कीमत पर बिक्री

20. प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता के इस दावे की भी जांच की है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु की बिक्री से हुए घाटों के कारण नुकसान हो रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति का आकलन करने में कम कीमत पर बिक्री एक महत्वपूर्ण संकेतक है। प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के लिए क्षतिरहित कीमत की गणना की है और कम कीमत पर बिक्री की मात्रा ज्ञात करने के लिए पहुँच मूल्य के साथ इसकी तुलना की है। यह विश्लेषण संबद्ध देशों से 6-10% तक कम कीमत पर बिक्री को दर्शाता है।

कीमत हास

पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुआ कीमत हास				
	1999-00	2000-01	2001-02	जाँच अवधि
उत्पादन लागत	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	127.83	102.94	131.30
बिक्री कीमत	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	123.25	108.05	117.27
बिक्री के % के रूप में उत्पादन	****	****	****	****

लागत				
सूचीबद्ध	100	103.7	92.8	116.4

यद्यपि आधार वर्ष से 2000-01 तक बिक्री कीमत में वृद्धि हुई तथापि 2001 से जाँच अवधि तक उसमें मामूली हास हुआ। अतः यह नोट किया गया है कि विचाराधीन अवधि के दौरान कीमत में कमी की कोई महत्वपूर्ण प्रवृत्ति नहीं रही है।

घरेलू उद्योग की स्थिति

प्रारंभिक टिप्पणियाँ

23. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमों के अनुबंध II(iv) के अनुसार ऐसे संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

बिक्री

24. घरेलू उद्योग की व्यापार बिक्रियों की मात्रा निम्नानुसार थी :-

वर्ष	1999-00	2000-01	2001-02	अप्रैल, 02 से जून, 03 जाँच अवधि	जाँच अवधि वार्षिकीकृत
बिक्री	****	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100.00	115.09	114.32	89.74	89.74
व्यापार माँग	21007	15745	17872	19035	15228
घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा	40-45	70-75	65-70	58-62	58-62

यह नोट किया गया है कि विचाराधीन अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में अनियमित प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। यह देखा गया है कि 1999-2000 और 2001-2002 के बीच बिक्री मात्राओं में वृद्धि हुई। तथापि, उसके बाद जाँच अवधि में बिक्री मात्रा में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई। परिणामस्वरूप कुल माँग के हिस्से के रूप में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भी जाँच अवधि के दौरान अनियमित प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है, हालाँकि 2000-01 तक बढ़ने के बाद जाँच अवधि तक उसमें नियमित रूप से गिरावट आई है।

25. चूँकि घरेलू उद्योग की पर्याप्त कैप्टिव खपत भी है इसलिए प्राधिकारी ने कैप्टिव खपत पर पाटन के संभावित प्रभाव की आगे जांच की। घरेलू उद्योग की बिक्री जिसमें कैप्टिव खपत भी शामिल है, निम्नानुसार थीं-

वर्ष >>	1999-00	2000-01	2001-02	अप्रैल 02 – जून 03 जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
कैप्टिव खपत सहित बिक्री (मी. टन)	****	****	****	****	****
सूची	100	103	96	117	93

यद्यपि, कैप्टिव बिक्री में भी गिरावट प्रदर्शित हुई है तथापि, प्राधिकारी यह मानते हैं कि यह गिरावट पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कैप्रोलेक्टम के उत्पादन के लिए विचाराधीन उत्पाद की कैप्टिव रूप से खपत की गई है, जबकि घरेलू उद्योग की व्यापारिक बिक्री कैप्रोलेक्टम के उत्पादकों से इतर उद्योग को की गई है। ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि घरेलू उद्योग का निष्पादन अपनी कैप्टिव खपत की तुलना में इसके व्यापारिक बाजार में उत्पाद के पाटन के कारण प्रभावित होगा।

लाभ

2001. घरेलू उद्योग की प्रति इकाई उत्पादन तथा बिक्री की गई मात्राओं के लिए लाभ/हानि निम्नानुसार रही है :

वर्ष	1999-00	2000-01	2001-02	अप्रैल 02 – जून 03 जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
ब्याज पूर्व प्रति इकाई लाभ/हानि (रू./मी. टन)	****	****	****	****	****
सूची	100	85	129	14	14
प्रति इकाई ब्याज (रू./मी. टन)	****	****	****	****	****
सूची	100	95	78	90	90
प्रति इकाई निवल लाभ/हानि (रू./मी. टन)	****	****	5532	(****)	(****)
सूची	100	82	144	-8	-8
ब्याज पूर्व कुल लाभ/हानि	****	****	****	****	****
सूची	100	43	148	15	12
ब्याज पश्चात निवल लाभ/हानि	****	****	****	****	****
सूची	100	94	165	-9	-7

लाभों में वास्तविक तथा संभाव्य गिरावट				
	1999-00	2000-01	2001-02	जांच अवधि वार्षिकीकृत
बिक्री मूल्य लाख में	****	****	****	****
बिक्री मात्रा	****	****	****	****
प्रति इकाई बिक्री कीमत	****	****	****	****
सूची	100	123	108	117
प्रति इकाई लाभ/हानि	****	****	****	****
सूची	100	82	144	-8
लाभ (लाख रूपए)	****	****	****	(****)
सूची	100	116	178	-8
बिक्री में लाभ का %	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	82.34	144.71	-8.01

उपर्युक्त से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आई है ।

उत्पादन, क्षमता तथा क्षमता उपयोग

27. घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता तथा क्षमता उपयोग निम्नानुसार सारणीबद्ध है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि याचिकाकर्ता अपनी कैप्टिव जरूरतों तथा साथ ही साथ व्यापारिक बिक्रियों के लिए एक सी सुविधाओं का उपयोग करते हैं, इसलिए कैप्टिव खपत को भी शामिल करते हुए उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में प्रवृत्तियों का आकलन करना उपयुक्त होगा ।

वर्ष	1999-00	2000-01	2001-02	जांच अवधि वार्षिकीकृत
क्षमता	67500	67500	67500	67500
उत्पादन	67889	68986	64363	63256
सूचीकृत	100	101.62	94.81	93.18
क्षमता उपयोग	****	****	****	****
सूची	100	101.62	94.81	93.17
उत्पादन में परिवर्तन (मी. टन)		1097	-4623	-1107
कैप्टिव खपत (मी. टन)	****	****	****	****
सूची	100	101	92	94
कैप्टिव खपत में परिवर्तन (मी. टन)		692	-4917	830
व्यापारिक बिक्री	****	****	****	****
सूची	100	115	114	89
व्यापारिक बिक्री में परिवर्तन (मी. टन)		1543	-79	-2512

उपर्युक्त से यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के उत्पादन में गिरावट इष्टतम से कम कीमत के बावजूद है, जिस पर घरेलू उद्योग ने पाटित आयातों का मुकाबला करने के लिए माल की बिक्री की थी। यद्यपि यह नोट किया जाता है कि उत्पादन में कुछ गिरावट कैप्टिव खपत में गिरावट के कारण भी हुई होगी, तथापि उत्पादन में कैप्टिव खपत में गिरावट से अधिक कमी आई।

बाजार हिस्सा

28. भारत में मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा निम्नानुसार है :-

व्यापारिक मांग में	1999-00	2000-01	2001-02	जांचअवधि वार्षिकीकृत
घरेलू उद्योग का हिस्सा	48.66	74.72	65.39	60.24
पाटित आयातों का हिस्सा	23.06	21.78	28.49	34.74
अन्य आयातों का हिस्सा	28.28	3.49	6.12	5.02

यह देखा गया है कि व्यापारिक मांग में घरेलू बाजार का हिस्सा वर्ष 1999-2000 तथा 2000-2001 के बीच पर्याप्त रूप से बढ़ा। तथापि, इसके पश्चात् घरेलू उद्योग बाजार हिस्से को खो रहा है।

रोजगार तथा मजदूरी

29. घरेलू उद्योग के रोजगार तथा मजदूरी निम्नानुसार है :-

	1999-00	2000-01	2001-02	जांचअवधि वार्षिकीकृत
कर्मचारियों की संख्या- कंपनी समग्र रूप से	4193	4072	3887	3532
कर्मचारियों की संख्या- विचाराधीन उत्पाद	****	****	****	****
सूची	100	101	73	76
मजदूरी लाख रु.	****	****	****	****
सूची	100	96	95	106
प्रति कर्मचारी व्यापारिक बिक्री	****	****	****	****
सूची	100	113	136	116
प्रति कर्मचारी सकल उत्पादन	****	****	****	****
सूची	100	100	113	121
उत्पादन की प्रति इकाई मजदूरी	****	****	****	****
सूचीकृत	100	94.72	100.31	113.79
व्यापारिक बिक्री की प्रति इकाई मजदूरी	****	****	****	****
सूची	100	83	83	111

यह प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग को रोजगार कम करने हेतु बाध्य होना पड़ा है। तथापि, मजदूरी में यह गिरावट केवल पाटन के कारण नहीं हो सकती है क्योंकि यह पाया गया है कि कंपनी ने अन्यथा भी रोजगार में कमी की है। उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी इस मानदण्ड के आधार पर घरेलू उद्योग को हुई क्षति का अंतिम रूप से निर्धारण करने का प्रस्ताव नहीं करते हैं।

उत्पादकता

30. यद्यपि प्रतिदिन उत्पादन में गिरावट आई तथापि प्रति कर्मचारी उत्पादन बढ़ा। प्रति कर्मचारी उत्पादन में वृद्धि उत्पादन में गिरावट के बावजूद हुई है। यह नोट किया जाता है कि क्षति निर्धारण अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

	1999-00	2000-01	2001-02	जांचअवधि वार्षिकीकृत
उत्पादन (मी.टन)	67889	68986	64363	63256
प्रतिदिन उत्पादन	193.97	197.10	183.89	180.73
सूची	100	101	93	92
प्रति कर्मचारी उत्पादन (मी.टन)	****	****	****	****
सूची	100	100	113	121
बिक्री कारोबार लाख रु.	****	****	****	****
सूची	100	141	123	105
प्रति कर्मचारी बिक्री कारोबार लाख रु. में	****	****	****	****
सूची	100	140.31	147.43	136.84

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

31. संबद्ध देशों से आयातों के कारण भारतीय बाजार में कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री हो रही है। आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम है। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में वर्ष 2000-01 से जांच अवधि तक गिरावट आई। यद्यपि, इसमें आधार अवधि से वर्ष 2000-01 तक पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई। यह भी नोट किया जाता है उत्पादन की लागत में निवल बिक्री वसूली में वृद्धि की तुलना में अधिक वृद्धि हुई है। इसके अलावा वर्ष 2000-01 से जांच अवधि तक, जबकि उत्पादन की लागत बढ़ी, घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली में गिरावट आई।

	1999-00	2000-01	2001-02	जांचअवधि वार्षिकीकृत
निवल बिक्री वसूली	****	****	****	****
सूचीकृत	100	123.25	108.05	117.27
कीमत कटौती- संबद्ध देश	****	(****)	****	****
उत्पादन की लागत	****	****	****	****
सूची	100	127	103	131

निवेशों पर आय

32. निवेशों पर आय (ब्याज पूर्व लाभ) में लाभ के समान प्रवृत्ति दिखाई देती है। घरेलू उद्योग को पहले निवेशों पर धनात्मक आय हो रही थी जो कि जांच अवधि में ऋणात्मक हो गई है। घरेलू उद्योग के ब्याज पूर्व लाभ में भी काफी गिरावट आई।

	1999-00	2000-01	2001-02	अप्रैल 02 – जून 03 जांचअवधि
लगाई गई पूंजी पर आय को ध्यान में रखते हुए				
ब्याज पूर्व लाभ	****	****	****	****
सूची	100	95	149	19
ब्याज पश्चात लाभ	****	****	****	(****)
सूची	100	91	166	-10

नकद प्रवाह पर प्रभाव :

33. याचिकाकर्ता एक बहु उत्पाद कंपनी है जो अनेक उत्पादों का उत्पादन करती है। घरेलू उद्योग का नकद प्रवाह, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा बेचे गए सभी उत्पादों से संबंधित प्रचालनों को प्रतिलक्षित करता है। तथापि, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के निष्पादन की विचाराधीन उत्पाद से संबंधित नकद प्रवाह के रूप में जांच की है। केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह इसके समस्त उत्पादन (जिसमें कैप्टिव खपत के लिए भी उत्पादन शामिल है) के रूप में निम्नानुसार है :

	1999-00	2000-01	2001-02	जांचअवधि वार्षिकीकृत
व्यापारिक बिक्री पर नकद प्रवाह	****	****	****	****
सूची	100	104	152	34
कैप्टिव सहित सकल बिक्री पर नकद लाभ	****	****	****	****
सूची	100	93	128	35

निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह				
	जांच अवधि 3	जांच अवधि 2	जांच अवधि 1	जांच अवधि
निवेश पूंजी	****	****	****	****
% आय		5.60	9.34	-2.99
सूची		100	166	-53
वास्तविक नकद लाभ	****	****	****	****
प्रवृत्ति y/y %		112.00	399.44	-419.4
सूची	100.00	105.93	121.15	77.79

उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की नकद लाभ की स्थिति जिसमें कि वर्ष 2001-02 तक वृद्धि हो रही थी, उसमें जांच अवधि में गिरावट आई। तथापि, बहुउत्पाद कंपनी होने के कारण प्राधिकारी इस मानदण्ड के आधार पर क्षति का अंतिम रूप से निर्धारण नहीं कर सके।

भण्डार सूची

34. घरेलू उद्योग की भण्डार सूची निम्नानुसार रही है :

	1999-00	2000-01	2001-02	जांचअवधि वार्षिकीकृत
प्रारंभिक स्टॉक	****	****	****	****
सूची	100	163	50	46
अंतिम स्टॉक	****	****	****	****
सूची	100	31	28	48

भण्डार सूची पर वास्तविक तथा संभाव्य नकारात्मक प्रभाव				
	1999-00	2000-01	2001-02	जांचअवधि वार्षिकीकृत
भण्डार सूची/स्टॉक मी.टन	****	****	****	****
बिक्री मात्रा मी.टन	****	****	****	****
बिक्री मात्रा में भण्डार सूची का %	12.40	3.34	3.11	6.74
सूचीकृत स्टॉक	100.00	31.00	28.71	48.79

उपर्युक्त से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग की माल सूचियां वर्ष 2001-02 तक कम हुईं। तथापि, उसके बाद माल सूचियों में बढ़ोत्तरी हुई। इसलिए प्राधिकारी इस मापदंड के कारण हुई किसी क्षति का निर्णायक रूप से निर्धारण नहीं कर सके।

पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

35. एक बहुउत्पाद कंपनी होने के कारण जहां यह उत्पाद इस कंपनी के कुल कारोबार का एक छोटा सा हिस्सा बनता है, प्राधिकारी का यह मानने का प्रस्ताव नहीं है कि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता घरेलू उद्योग की क्षति निर्धारण में एक निर्णायक मापदंड हो सकता था।

वृद्धि

36. जहां तक विचाराधीन उत्पाद के प्रचालनों का संबंध है, घरेलू उद्योग ने नकारात्मक वृद्धि का सामना किया है क्योंकि बिक्रियों में कमी आयी है और घरेलू उद्योग का लाभ समाप्त कर दिया गया है और इसको अब घाटे में परिवर्तित कर दिया गया है। निम्नलिखित तालिका में यह दर्शाया गया है कि अनेक मापदंडों में घरेलू उद्योग ने नकारात्मक वृद्धि की है। तथापि, वृद्धि मापदंडों में इन गिरावटों को संबद्ध वस्तु की मांग में अत्यधिक गिरावट के व्यापक संदर्भ में देखना होगा।

वर्ष	1999-00	2000-01	2001-02	अप्रैल 02 - जून 03 जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
बिक्रियां	****	****	****	****	****
सूची	100	115	114	112	89.7
ब्याज से पहले लाभ/हानि	****	****	****	****	****
सूची	100	98	148	15.6	12.5
ब्याज के बाद लाभ/हानि	****	****	****	(****)	(****)
सूची	100	94	165	-9	-7
उत्पादन	67889	68986	64363	79071	63256
सूची	100	101	94	116	93.2
नकद लाभ- व्यापारिक बिक्रियां	****	****	****	****	****
सूची	100	104	152	33	34
मांग में बाजार हिस्सा- घरेलू उद्योग	50.37	74.72	65.39	60.24	60.24

उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग ने अनेक मापदंडों के संबंध में नकारात्मक वृद्धि का सामना किया ।

पाटन मार्जिन

37. संबद्ध देशों से पाटन मार्जिन 16% से 56% के बीच है और प्राधिकारी द्वारा इसे महत्वपूर्ण माना गया है ।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों की मात्रा में मामूली वृद्धि हुई । कुल आयातों तथा व्यापारिक मांग में संबद्ध देशों के पाटित आयातों के हिस्सों में भी बढ़ोत्तरी हुई । प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों की संबद्ध वस्तु से घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री, कीमत के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई, यद्यपि कीमत कटौती के मार्जिन को महत्वपूर्ण नहीं माना गया है । यह भी नोट किया जाता है कि विभिन्न क्षति मापदंडों के लिए अलग-अलग तथा परस्पर विरोधी संकेतक हैं । जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि कुल मांग में पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है, तथापि कुल मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में वृद्धि का रूख देखा गया है । इसके साथ यह तथ्य भी जुड़ा हुआ है कि क्षति अवधि के दौरान समग्र मांग में गिरावट आयी है । तथापि, अन्य मापदंडों जैसे घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और बिक्री कीमतों से घरेलू उद्योग को सकारात्मक क्षति प्रदर्शित होती है । कुल मिलाकर प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

कारणात्मक संबंध**(क) भूमिका**

39. घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के कारण संबंधी किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए तथा पाटनरोधी संबंधी करार के अनुच्छेद 3.5 तथा यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अन्तर्गत नियम 11 के अन्तर्गत अनुबंध II के पैरा (V) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव तथा उद्योग पर उनके परिणामों की जांच की थी। पाटित आयातों से इतर ज्ञात कारकों जिनसे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच सकती थी, की भी यह सुनिश्चित करने के लिए जांच की गई कि इन अन्य कारकों से हुई संभावित क्षति के लिए पाटित आयात जिम्मेदार तो नहीं थे।

(ख) पाटित आयातों के प्रभाव

	1999-00	2000-01	2001-02	जांच अवधि वार्षिकीकृत
व्यापारिक मांग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100.00	74.95	85.08	72.49
कैप्टिव सहित मांग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100.00	94.15	90.59	88.27
व्यापारिक बिक्रियां	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100.00	115.09	114.32	89.74
आयात				
संबद्ध देश	4843	3430	5093	5290
अन्य देश	5941	550	1094	765

पाटित आयातों की औसत कीमत और घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत				
	पीओआई 3	पीओआई 2	पीओआई 1	पीओआई
सूचीबद्ध (आयात कीमत)	100.0	131.2	106.8	117.7
सूचीबद्ध (सीओपी-डीआई)	100.0	127.8	103.9	131.3
घरेलू कीमतें	100.0	123.2	108.0	117.3

40. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में वर्ष 1999-2000 और वर्ष 2000-01 के बीच कमी आयी। तथापि, वर्ष 2000-01 में इस कमी से घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। इसके विपरीत, घरेलू उद्योग ने तुलनात्मक रूप से अधिक बिक्रियां की। वर्ष 2000-01 से संबद्ध वस्तु की मांग में कमी नहीं आयी है और यह स्थिर रही है जबकि घरेलू उद्योग की बिक्रियों में कमी आयी है। प्राधिकारी संबद्ध वस्तु की मांग, संबद्ध देशों से आयात और घरेलू बिक्रियों के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण नहीं कर सके।

41. कीमत मापदंडों पर मांग में परिवर्तनों के प्रभाव की भी जांच की गई थी। यह नोट किया गया कि संबद्ध वस्तु की मांग और घरेलू उद्योग को हुए लाभ के बीच संबंध में कोई रुझान नहीं है।

42. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की कैप्टिव खपत को शामिल करने के पश्चात मांग की भी जांच की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कैप्टिव मांग में भी कमी आयी है। तथापि, इसको पाटित आयातों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता था क्योंकि उत्पाद की कैप्टिव खपत कैप्रोलेक्टम के उत्पादन में है जबकि व्यापारिक बिक्रियां कैप्रोलेक्टम के उत्पादन के लिए नहीं हैं। अतः कैप्टिव मांग व्यापारिक मांग की बाजार गति से प्रभावित नहीं हुई है। कैप्टिव मांग में कैप्रोलेक्टम के कथित पाटन के कारण गिरावट आ गई होगी जिसकी प्राधिकारी अलग से जांच कर रहे हैं।

(ग) अन्य कारकों के प्रभाव

(क) अन्य घरेलू उत्पादकों का निष्पादन

43. विचाराधीन अवधि के दौरान कोई अन्य ऐसा घरेलू उत्पादक नहीं था जिसने कोई व्यापारिक बिक्रियां की हों। एक अन्य उत्पादक मै0 एफ ए सी टी लि0 ने केवल अपने कैप्टिव उपभोग के लिए समूचे उत्पादन का उपभोग कर लिया है और इसलिए घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में उनके उत्पादन को ध्यान में नहीं रखा गया है।

(ख) स्व-आरोपित क्षति, पैमाने की किफायतें एवं लागत दक्षता

44. स्व-आरोपित क्षति, पैमाने की किफायतें एवं लागत दक्षता के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों में से किसी के द्वारा कोई भी तर्क नहीं दिया गया है। यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत एवं उसकी क्षतिरहित कीमत का निर्धारण कंपनी के अन्य व्यवसाय से संबंधित किसी ऊपरी व्यय पर विचार किए बिना घरेलू उद्योग के आंकड़ों का सत्यापन करके संबद्ध वस्तु की वास्तविक उत्पादन लागत को ध्यान में रखकर किया है।

(ग) मांग में संकुचन या खपत की पद्धति में परिवर्तन

45. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान समग्र मांग में संकुचन हुआ है जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति के लिए एक कारक हो सकता है। इसके अलावा घरेलू उद्योग की कैप्टिव बिक्रियों में गिरावट आयी है जिसका यह अर्थ है कि घरेलू उद्योग कथित रूप से अपने अन्य उत्पादों पर क्षति का सामना कर रहा है जो इस बात पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की लाभप्रदता के लिए भी जिम्मेदार हो सकता है कि घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु के लिए कोई विशेष क्षमता नहीं रखी गई है और घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु की बिक्रियों के कारण उठाई गई क्षति का निश्चित रूप से निर्धारण करना कठिन है। प्राधिकारी संबद्ध वस्तु की खपत की पद्धति में किसी परिवर्तन तक नहीं पहुंच सके। अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि खपत की पद्धति में कोई प्रत्यक्ष परिवर्तन नहीं हुआ है।

(घ) पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा तथा कीमतें

46. गैर-संबद्ध आयातों के विश्लेषण से पता चलता है कि ऐसे आयात बहुत ही निम्न स्तर पर रहे हैं। इसके अलावा, इन स्रोतों में से कुछ की आयात कीमतें जांच अवधि में काफी अधिक थीं। अन्य स्रोतों से आयात कीमतें कम थीं और संबद्ध देशों से आयातों के तुलनीय थीं। तथापि इन देशों का अलग-अलग हिस्सा आयात मात्राओं के 3% से कम था और इनका सामूहिक हिस्सा आयात मात्राओं के 7% से कम था। इसके अलावा संबद्ध देशों से इतर सभी देशों से गैर-पाटित आयातों के हिस्से में कुल मांग में और कुल आयातों के हिस्से में भी कमी आई। पूर्वोक्त के मद्देनजर यह नोट किया जाता है कि गैर-संबद्ध देशों से आयातों का घरेलू उद्योग पर प्रभाव नहीं पड़ा है।

(ङ.) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं तथा विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के लिए एक अकेला बाजार है जहां संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के साथ प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा करते हैं। संबद्ध देशों से सौदेवार आयातों तथा संबद्ध देशों के सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों की जांच के आधार पर यह लगता है कि कीमत से आपूर्तिकर्ता की पसन्द का निर्धारण होता है क्योंकि पाटित संबद्ध वस्तुएं घरेलू उत्पादक के लिए समान उत्पाद हैं। व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाओं संबंधी कोई आरोप नहीं है। इसके अलावा यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के समान वाणिज्यिक ग्रेडों तथा विनिर्देशन का मुकाबला करने के लिए आयातित उत्पाद को बेचा जाता है। यह भी नोट किया जाता है कि आयातित संबद्ध वस्तुएं और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएं समान वस्तुएं हैं तथा इनको समान अनुप्रयोगों/उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता है।

(च) प्रौद्योगिकी विकास निर्यात कार्य-निष्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादकता

48. हितबद्ध पक्षकारों में से किसी ने भी इस तथ्य के संबंध में कोई तर्क नहीं दिया है कि प्रौद्योगिकी में संभावित विकास घरेलू उद्योग को हो रही क्षति का संभावित कारण हो सकता था।

49. घरेलू उद्योग इस उत्पाद का निर्यात नहीं कर रहा है। निर्यात कार्य-निष्पादन में संभावित ह्रास घरेलू उद्योग की क्षति का संभावित कारण नहीं हो सकता है।

50. जहां तक उत्पादकता में सुधार का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान प्रतिवर्ष लगाए गए प्रति व्यक्ति उत्पादन में महत्वपूर्ण रूप से बढ़ोत्तरी हुई है। अतः उत्पादकता में संभावित ह्रास घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं है।

(छ) कारणात्मक संबंधी निष्कर्ष

51. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान समग्र मांग में संकुचन हुआ है जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति के लिए एक कारक हो सकता है। इसके अलावा घरेलू उद्योग की कैप्टिव बिक्रियों में गिरावट आयी है जिसका अर्थ यह है कि घरेलू उद्योग कथित रूप से अपने अन्य उत्पादों पर क्षति का

सामना कर रहा है जो इस बात पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की लाभप्रदता के लिए भी जिम्मेदार हो सकता है कि घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु के लिए कोई विशेष क्षमता नहीं रखी गई है। प्रकटीकरण विवरण के पश्चात घरेलू उद्योग के निवेदनों के संदर्भ में प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रवृत्ति विश्लेषण के लिए सकल क्षति अवधि हेतु हेतु क्षति और कारणात्मक संबंध संबंधी विश्लेषण करना अपेक्षित है और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के लिए संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों को जिम्मेदार ठहराने हेतु किसी विशिष्ट परिच्छेदन का चयन नहीं किया जा सकता है। यह भी नोट किया जाता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी पहले ही अनुप्रवाहगामी उत्पाद अर्थात् कैप्रोलेक्टम पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश कर चुके हैं जिससे घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु की कैप्टिव खपत में गिरावट से उत्पन्न होने वाली क्षति पर ध्यान रखे जाने की उम्मीद है। कारणात्मक संबंधी निष्कर्ष निकालते समय प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के पास संबद्ध वस्तु की विशेष क्षमता नहीं है और कैप्टिव खपत के बाद कैप्रोलेक्टम के उत्पादन के लिए जो कुछ बच जाता है उसे संबद्ध वस्तु की व्यापारिक बिक्रियों में लगा दिया जाता है। अतः संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों, घरेलू उद्योग द्वारा की गई बिक्रियां और परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को हुई क्षति से ऐसा कोई भी कारणात्मक संबंध स्पष्ट नहीं है।

(झ) भारतीय उद्योग का हित

52. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को क्षति हो रही है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की पुनःस्थिति लाना है जोकि देश के सामान्य हित में है।

53. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी। यह नोट किया जाता है कि पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता तब भी दो या इससे अधिक स्रोतों से आपूर्ति बनाए रख सकते हैं।

(ञ) निष्कर्ष

54. प्राधिकारी पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि-

(क) संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का भारत को निर्यात इनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।

(ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

(ग) तथापि, प्राधिकारी ने यह निर्धारण किया है कि संबद्ध देशों की संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के बीच कारणात्मक संबंध नहीं है।

अतः इस संबद्ध जांच में संबद्ध देशों की संबद्ध वस्तु पर कोई पाटनरोधी शुल्क न लगाने की सिफारिश की जाती है।

अभिजित सेनगुप्त, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 7th October, 2004

Final Finding

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Cyclohexanone originating in or exported from the European Union, Chinese Taipei and USA.

No. 14/17/2003-DGAD - Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE:

1. The procedure described below has been followed:-

(i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Gujarat State Fertilisers and Chemicals Ltd (GSFC), Vadodra (hereinafter also referred to as petitioner), on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Cyclohexanone originating in or exported from European Union, Chinese Taipei and USA (hereinafter referred to as subject countries). The preliminary scrutiny of the application filed by the petitioner reveals certain deficiencies which were subsequently rectified by the petitioner. The petitioner was, therefore, considered as properly documented.

(ii) The Authority notified the Embassies/High Commissions of subject countries in India about the receipt of fully documented application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

3022GI/04-4

(iii) The Authority issued a Public Notice dated 8th October 2003 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of Cyclohexanone from subject countries.

(iv) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers, industry associations and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter in accordance with Rule 6(2).

(v) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the petition to all the known exporters and Embassies/High Commissions of subject countries/territories in India. None of the producers and exporters from subject countries has responded to the application.

(vi) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the known exporters from subject countries in accordance with Rule 6(4). None of the exporters filed any response or information to the questionnaire and notification.

(vii) The Embassies of the subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation in accordance with Rule 6(2) and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, application filed by the domestic industry (Non-Confidential) and questionnaire sent to the known exporters was also sent to the embassies of subject countries/territory in accordance with Rule 6(3).

(viii) The questionnaire was sent to the large number of importers in accordance with Rule 6(4). None of the importers and users of the subject goods filed any response to the questionnaire and notification.

(ix) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties in accordance with Rule 6(7);

(x) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 25th May, 2004. Parties presenting views orally were requested to file written submissions, of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by opposing parties and offer rebuttals, if any. None of the interested parties have filed any response other than M/s. BASF. M/s. BASF has stated that they have not exported any material in the

period of investigation and they have further requested for New Shipper Review. Domestic verification as well as exporter's verification of the data submitted by them were undertaken by the Authority. The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of Final Findings with regards to determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. In accordance with Rule 16 of The Rule supra, the essential facts/ basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 10th September 2004 and comments received on the same are duly considered in Final Findings.

(xi) **** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(xii) The investigation of dumping and injury covered the period from 1st April 2002 to 30th June 2003 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1999-2000 to the end of POI. The import data has been examined from transaction wise data made available by the DGCIS for imports from the subject countries and countries other than subject countries.

(xiii) Domestic verification of the data submitted by them were undertaken by the Authority. The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of Final Findings with regards to determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. In accordance with Rule 16 of The Rule supra, the essential facts/ basis considered for these findings are being disclosed to known interested parties and comments received on the same would be duly considered in Final Findings.

(xiv) The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the optimum cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.

(xv) Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

B. Product under consideration

2. The Product under consideration in the present petition is Cyclohexanone, having chemical formula $C_6H_{10}O$ originating in or exported from Taiwan, EU and USA. Cyclohexanone is manufactured from Benzene. It acts as an intermediate in the production of adipic acid and in the manufacture of Nylon6. It is mainly sold in mild steel drums or made available in mild steel road tankers.

It is primarily used as an intermediate in the production of Caprolactum and in the manufacture of Nylon6. It is also used as a solvent and thinners for lacquers, especially those containing nitrocellulose or vinyl chloride polymer and copolymer resins including polyvinyl chloride and methacrylate ester polymers, as a sludge solvent in oil for piston type aircraft lubrication and as a solvent for DDT and organic phosphorus insecticides and pesticides. There are no arguments from any of the interested parties rebutting the contention of the domestic industry.

Cyclohexanone is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act and at subheading No.29142200 in the International Trade Classification based on harmonized system.

C. Like Article

3. The petitioner has claimed that goods produced by it are like articles to the goods originating in or exported from subject countries/ territory. There is no significant difference in the subject goods produced by the petitioner and those exported from subject countries/ territory. Petitioner claims that the two are technically and commercially substitutable. Therefore, for the purpose of present investigation, the goods produced by the petitioner are being treated as Like Articles of the product imported from the subject countries/ territory within the meaning of the Rules, supra.

Petitioner have furnished copy of the invoices raised to various customers as sales evidence. Petitioner has also furnished import information as per secondary sources, which shows name of importer. It shows that material is being imported by same parties, who are buying material from domestic industry.

There is no arguments raised by any one of the opposing interested parties in this regard. On the basis of the detailed investigation, the Authority notes that Cyclohexanone produced by the domestic industry has characteristics, which are similar to those

imported from subject countries and to those sold in the market of exporters' countries. In view of the above, the Authority holds that Cyclohexanone produced by the domestic industry and those being imported from and sold in the subject countries are like articles within the meaning of the rules.

D. Domestic Industry

4. The petition has been filed by M/s Gujarat State Fertilizers & Chemicals Limited, Vadodra, Gujarat. The Authority has determined that the petitioner is a major producer of subject goods in India accounting for a major proportion of the production of the subject goods in India. The Authority notes that the petitioner constitutes a domestic Industry within the meaning of the rule 2(b) and the petitioner satisfies the criteria of standing to file the petition in terms of Rule 5(3)(a) of the Rules.

E. De-minimus.

5. As regards ascertaining that the imports from the subject countries during the period of investigation (POI) are above de-minimus levels, the Authority has referred to the transaction wise data from the subject countries as made available by DGCIS. After examining the data, The Authority holds that imports from all the subject countries are above de-minimus levels in terms of volume of imports.

F. Dumping.

6. Under Section 9A(1) I of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:

1. The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
2. When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such

sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

- a. Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- b. The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

7. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). None of the exporters have responded to the questionnaire in the form and manner required as per letter to the exporters and exporters questionnaire. In fact there are no arguments from any of the exporters in this investigation.

F.1 USA, EU and Chinese Taipei.

(a) Cooperation

8. None of the exporters from the subject countries/territory have responded to the questionnaire in the form and manner required as per letter to the exporters and exporters questionnaire. In fact there are no arguments from any of the exporters in this investigation. M/s. BASF have stated that they have not exported any material in period of investigation and requested for new shipper investigation. WTO agreement on Anti Dumping states as in this regard. "As soon as possible after the initiation of the investigation, the investigating authorities should specify in detail the information required from any interested party, and the manner in which that information should be structured by the interested party in its response. The authorities should also ensure that the party is aware that if information is not supplied within a reasonable time, the authorities will be free to make determinations on the basis of the facts available, including those

contained in the application for the initiation of the investigation by the domestic industry.”

(b) Normal Value & Export Price:

9. The prices of the Cyclohexanone are being periodically reported in reputed journal “Polyamides and Intermediates” published by Tecnon. The petitioner has based its normal value in case of EU and Taiwan on the basis of the prices reported in this journal. The industry has stated that they made efforts to get evidence of prices of subject goods in the domestic market of subject countries. Efforts were also made to get an evidence of price from a published journal. However, it has been stated that they have not been able to get any evidence of price at which subject goods are being sold in the domestic market of subject countries, as the product does not appear to be widely traded (unlike products such as Benzene and Caprolactam). In view of the non cooperation from all exporters from each of the subject countries, Designated Authority has no option but to proceed on the basis of best information available. The Authority has determined normal value of the cyclohexanone on the basis of the prices of the subject goods reported in this journal for EU and Chinese Taipei where these prices are quoted in this journal for EU and Asia. For USA, normal value has been constructed on the basis of the prices of the cyclohexane reported in this journal for USA. It is noted that the claim made by the petitioner with regard to determination of normal value has also not been disputed by the exporter or other interested parties. Under the circumstances, normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rule 6(8) of the Anti-dumping Rules. Therefore, the information available on the published journal with reference to the prices of the subject goods in the country of origin has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods for the exporter. Export price at ex factory level has been determined with the available data from DGCIS and with adjustments as per the facts available.

(c) Comparison:

10. For the purpose of a fair comparison between the normal value and export price at an ex factory level, due allowance wherever appropriate, has been allowed in respect of transport, insurance, handling and other costs.

(d) Dumping Margin:

11. In accordance with Rule 6(IV) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of constructed normal values with the weighted average export price at an ex factory level. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is mentioned below.

	NV Ex	EP Ex	DM	DM %
	US \$	US \$	US \$	%
Chinese Taipei	****	****	****	16.35
EU	****	****	****	21.56
USA	****	****	****	56.06

G. InjuryDomestic consumption/demand

12. For the calculation of the Domestic consumption/demand of the product under consideration in a domestic market, the authority added the sales volume of the domestic industry to the total imports into the domestic market. On this basis, it is noted that the domestic demand or consumption of the subject goods in the domestic market declined from 21007 MTs in 1999-2000 to 15228 MTs representing a decline of 28%.

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Merchant Demand	21007	15745	17872	15228
Indexed	100.00	74.95	85.08	72.49
Demand including captive	****	****	****	****
Indexed	100.00	94.15	90.59	88.27

13. Cumulative Assessment of the effects of imports concerned

i) The Authority examined whether imports of subject goods originating in subject countries should be assessed cumulatively as per Article 3.3 of the Agreement on Anti-Dumping and Rule 11 of the Anti Dumping Rules Under the Customs Tariff Act.

ii) The margins of dumping established in relation to the imports from each of the subject countries) was above the de minimus threshold as defined in Article 5.8 of the Agreement on Anti-Dumping and Rule 14 of the Anti Dumping Rules and Volume of dumped imports from each of these countries was not negligible.

iii) The domestic product and product supplied by producers in subject countries are like articles; and the imported products and domestically produced subject goods can and are being interchangeably used. Transaction wise information on importers from various countries and sales invoices of the domestic industry show that there are a number of parties who have resorted to purchase from the domestic industry and imports from subject countries. It is further noted that subject goods supplied by various countries compete in the same market. Further, it is also noted that products supplied by various producers in subject countries are being marketed in India during the same periods through comparable sales channels and under similar commercial conditions. Price undercutting is positive in respect of each of the subject countries.

iv) In the light of the above, the authority has considered that the criteria set out in article 3.3 of the Agreement of Anti-Dumping and as per para iii of the Annexure II under Rule 11 were met with respect to imports from each of the subject countries and therefore Imports from these subject countries should be cumulated for the purpose of injury determination.

Imports originating in the subject countries.

Volume

14. The volume of dumped imports of the subject goods from subject countries into the domestic market increased by 9% over the injury

period. Imports from subject countries were 4843 MT in 1999-2000, which declined to 3430 MT in 2000-2001. In 2001-2002, imports increased to 5093 MT, which increased to 5290 MT in period of investigation. The volume of dumped imports on annualised basis shows 9% increase over 1999-2000.

(MT)	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Market Share in Imports				
EU	3947	3430	3799	2788
USA	0	0	194	557
Chinese Taipei	896	0	1100	1945
Total	4843	3430	5093	5290
Changes in Volume of Dumped Imports		-1413	1663	197
Other Imports	5941	550	1094	765
Changes in Volume of Other Imports		-5391	544	-329

Share of subject countries in total imports

15. Over the period under consideration, the share of the dumped imports from the subject countries in the total imports increased by 42.46% percentage. The market share held by the dumped imports in the total imports increased from 44.91% in 1999-00 to 87.37% during the POI. It is therefore noted that the share of dumped imports in the total imports has increased in the share of the total imports.

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Market Share in Imports				
EU	3947	3430	3799	2788
Share	36.60	86.17	61.41	46.05
USA	0	0	194	557
Share	0	0	3.13	9.20
Chinese Taipei	896	0	1100	1945
Share	8.31	0	17.78	32.12
Market share of dumped imports from	44.91	86.18	82.32	87.37

Subject Countries in total imports				
Market share of Other countries in total imports	55.09	13.82	17.68	12.63

Market share of dumped imports in total demand

16. The Designated Authority has also examined share of dumped imports from subject countries in demand of subject goods in India. The Authority finds that share of subject countries, which was 23.03% in 1999-2000 in Merchant Demand increased to 34.74% during the POI.

Market share in Demand	1999-00	2000-01	2001-02	POI
Domestic industry	48.66	74.72	65.39	60.24
Imports – Subject Countries	23.06	21.78	28.49	34.74
Imports – Other Countries	28.28	3.49	6.12	5.02
Changes in market share of				
Dumped imports		-1.28	6.71	6.25
Other imports		-24.79	2.63	-1.1
Domestic industry		26.06	-9.33	-5.15

Market share of dumped imports in production of subject goods in India

17. It is found that dumped imports from subject countries increased in relation to production of the domestic industry. For the purpose, the Authority has considered production once by excluding captive consumption and thereafter by including captive consumption. There does not appear to be an uniform trend in this regards and though the dumped imports have increased in relation to the net production in India, there is a marginal increase when the captive consumption is also included.

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Considering *net production	****	****	****	****
Year by year		-17.61	14.34	13.62

change				
Considering *gross production	****	****	****	****
Year by year change		-2.16	2.94	0.45

*Net excludes captive consumption and *gross includes captive consumption.

On the basis of above examination, the it is concluded that there has been a marginal rise in the market share of dumped imports of the subject countries during the POI as compared to previous years in proportion to the net as well as gross productions.

Evolution of import price

18. The Authority notes that there was no consistent pattern in the import prices. The import prices increased very significantly in 2000-01 as compared to previous year and thereafter declined in 2001-02. The prices increased thereafter.

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
CIF export price from subject countries (weighted average)	26731	38069	30972	34128
% change over previous year		42.41	-18.64	10.19

The Authority notes that prices of the subject goods fluctuate in view of the fact that the input prices also keep fluctuating.

Price undercutting

19. A comparison of the prices of the product concerned was made between the exporting producers and the domestic industries average selling price in the domestic market, net of all rebates and taxes to unrelated customers, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. The CIF prices of the subject countries concerned were adjusted for post importation basic customs duty. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in the subject countries were sold in

the Indian market at prices which undercut the domestic industry's prices when expressed as a percentage of the domestic selling prices of the domestic industry. However the margin of undercutting is considered low in this case.

Rs. PMT	Landed Price	Undercutting Amount	Undercutting %
Net sales realization of the domestic industry	****		
Taiwan	****	****	5-10%
EU	****	****	1-5%
USA	****	****	10-15%
All subject countries	****	****	4-6%

Price Underselling

20. The Authority has also examined the claim of the petitioner that the domestic industry is suffering on account of the losses from the sale of subject goods. The Authority notes that price underselling is an important indicator to make an assessment of the injury. The Authority has worked out the non-injurious price for the product under consideration and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a price underselling 6-10% from subject countries which is not considered significant by the Authority.

Price Depression

Price Depression of domestic industry from dumped imports				
	1999-00	2000-01	2001-02	POI
Cost of production	****	****	****	****
Indexed	100	127.83	103.94	131.30
Selling prices	****	****	****	****
Indexed	100	123.25	108.05	117.27
Cost of production as % of sales	****	****	****	****
Indexed	100	103.7	92.8	116.4

Though the selling prices increased from the base year to 2000-01, it was marginally depressed from 2001 to POI. It is therefore noted that there is no significant trend of price decline during the period under consideration.

Situation of the Domestic Industry

Preliminary remarks

23. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra

Sales:

24. Merchant sales volumes of domestic industry were as follows:-

Year	1999-00	2000-01	2001-02	April 02 – June 03 POI	POI Annualized
Sales	****	****	****	****	****
Trend	100.00	115.09	114.32	89.74	89.74
Merchant Demand	21007	15745	17872	19035	15228
Market share of domestic industry	40-45	70-75	65-70	58-62	58-62

It is noted that the sales volume shows an erratic trend during the period under consideration. It is seen that the sales volumes increased between 1999-00 and 2001-02. However, sales volume have shown declining trend thereafter in the investigation period. As a result, the market share of the domestic industry also shows an erratic trend as a proportion to the total demand during the period under consideration though after increasing till 2000-01, it has declined consistently till the POI.

25. Since the domestic industry has significant captive consumption also, the Authority further examined the possible effect of dumping on captive consumption. Sales of the domestic industry, including captive consumption were as under:-

Year >>	1999-00	2000-01	2001-02	April 02 – June 03 POI	POI Annualized
Sales Including Captive consumption (MT)	****	****	****	****	****
Index	100	103	96	117	93

Even though the captive sales also show decline, the Authority does not consider that such decline is attributable to dumped imports. The Authority notes that the product under consideration is consumed captively for production of caprolactam, whereas the merchant sales of the domestic industry is to industry other than producers of caprolactam. It does not appear that performance of the domestic industry in respect of its captive consumption would be affected by dumping of the product in its merchant market.

Profits:

26. Profit/loss of the domestic industry per unit of production and for the quantities sold has been as under:

Year	1999-00	2000-01	2001-02	April 02 – June 03 POI	POI Annualized
Profit/loss per unit before interest (Rs./mt)	****	****	****	****	****
Index	100	85	129	14	14
Interest per Unit (Rs./mt)	****	****	****	****	****
Index	100	95	78	90	90
Net Profit/loss per unit (Rs./mt)	****	****	5532	(****)	(****)
Index	100	82	144	-8	-8
Total Profit/Loss before interest	****	****	****	****	****
Index	100	.43	148	15	12

Net Profit/Loss after interest	****	****	****	****	****
Index	100	94	165	-9	-7

Actual and Potential decline in profits				
	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annl
Sales Value Lacs	****	****	****	****
Sales quantity	****	****	****	****
Selling price per unit	****	****	****	****
Index	100	123	108	117
Profit/loss Per unit	****	****	****	****
Index	100	82	144	-8
Profit (Rs lacs)	****	****	****	(****)
Index	100	116	178	-8
% of profit to the Sales	****	****	****	****
Trend	100	82.34	144.71	-8.01

It appears from the above that profits of the domestic industry have been eroded.

Production, capacity and capacity utilization

27. Production, capacity and capacity utilization of the domestic industry have been tabled as under. The Authority notes that since the petitioner uses the same facility for its captive requirement as also merchant sales, it would be appropriate to assess trends in production and capacity utilization after including captive consumption also.

Year	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Capacity	67500	67500	67500	67500
Production	67889	68986	64363	63256
Indexed	100	101.62	94.81	93.18
Capacity Utilization	****	****	****	****
Index	100	101.62	94.81	93.17
Changes in production (MT)		1097	-4623	-1107
Captive consumption (MT)	****	*****	****	****
Index	100	101	92	94
Changes in captive consumption (MT)		692	-4917	830
Merchant sales	****	****	****	****
Index	100	115	114	89
Changes in merchant sales (MT)		1543	-79	-2512

It is seen from the above that production of the domestic industry has declined. The decline in production of the domestic industry is in spite of sub-optimal prices at which the domestic industry sold the material to compete with the dumped imports. While it is noted that some decline in production could be due to decline in captive consumption also, the production has declined more than the decline in captive consumption.

Market share

28. Share of the domestic industry in demand in India has been as under:

In merchant demand	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Share of domestic industry	48.66	74.72	65.39	60.24
Share of Dumped Imports	23.06	21.78	28.49	34.74
Share of Other Imports	28.28	3.49	6.12	5.02

It is seen that the share of the domestic industry in merchant demand increased significantly between 1999-2000 and POI.

Employment and Wages

29. Employment and wages of the domestic industry have been as follows:

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Employees numbers – Company as a whole	4193	4072	3887	3532
Employees numbers – Product under consideration	****	****	****	****
Index	100	101	73	76
Wages Rs. Lacs	****	****	****	****
Index	100	96	95	106
Merchant Sales per employee	****	****	****	****
Index	100	113	136	116
Gross Production per employee	****	****	****	****
Index	100	100	113	121
Wages per unit of production	****	****	****	****
Indexed	100	94.72	100.31	113.79
Wages per unit of merchant sales	****	****	****	****
Index	100	83	83	111

The decline in wages may not be solely due to dumping, as it is found that the company has otherwise also reduced employment.

Given above, the authority does not propose to conclusively determine injury to domestic industry on account of this parameter.

Productivity:

30. While production per day declined, production per employee increased. The increase in production per employee is in spite of reduction in production. It is noted that productivity per employee has increased during injury determination period.

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Production (MT)	67889	68986	64363	63256
Production per day	193.97	197.10	183.89	180.73
Index	100	101	93	92
Production per employee MT	****	****	****	****
Index	100	100	113	121
Sales turnover Rs. Lacs	****	****	****	****
Index	100	141	123	105
Sales turnover per employee in Rs. Lacs	****	****	****	****
Index	100	140.31	147.43	136.84

Factors affecting domestic prices

31. The imports from subject countries are resulting in price undercutting and price underselling in the Indian market. The landed price of imports is below the non injurious price of the domestic industry. Selling prices of the domestic industry have declined from 2000-01 to the POI though it increased significantly from base period to 2000-01. It is also noted that the cost of production has gone up much more than increase in NSR. Further, from 2000-01 to the POI, while the cost of production has gone up, the NSR of the domestic industry has gone down.

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Net sales realization	****	****	****	****

Indexed	100	123.25	108.05	117.27
Price undercutting-subject countries	****	(****)	****	****
Cost of production	****	****	****	****
Index	100	127	103	131

Return on investments

32. Return on investments (profit before interest) shows the same trend as that of profits. The domestic industry was earlier having positive return on investments, which became negative in period of investigation.

	1999-00	2000-01	2001-02	April 02 – June 03 POI
Return on Capital Employed Considering				
Profit before interest	****	****	****	****
Index	100	95	149	19
Profit after interest	****	****	****	(****)
Index	100	91	166	-10

Effects on cash flow:

33. The petitioner is a multi product company involved in production of a number of products. Cash flow of the domestic industry is reflective of operations relating to all products produced and sold by the domestic industry. However, the Authority has examined performance of the domestic industry in terms of cash profits in relation to the product under consideration. Cash profits of the domestic industry in relation to the product under consideration alone for its entire production (which includes production for captive consumption also) shows as under:

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Cash profit on Merchant Sales	****	****	****	****
Index	100	104	152	34
Cash Profit on Gross	****	****	****	****

Sales including Captive Index				
	100	93	128	35

Return on Investment & Cash Flow				
	POI 3	POI 2	POI 1	POI
Capital investment	****	****	****	****
% return		5.60	9.34	-2.99
Index		100	166	-53
Cash Profit Actual	****	****	****	****
Trend y/y %		112.00	399.44	-419.4
Index	100.00	105.93	121.15	77.79

It is evident from the above that cash profit situation of the domestic industry, which was increasing till 2001-02 declined in period of investigation. However, being the multiproduct company, the Authority could not conclusively determine injury on account of this parameter.

Inventories:

34. Inventories with the domestic industry has been as under:

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Opening stocks	****	****	****	****
Index	100	163	50	46
Closing stocks	****	****	****	****
Index	100	31	28	48

Actual and Potential Negative Effects on Inventories				
	1999-00	2000-01	2001-02	POI Ann
Inventories/Stocks MT	****	****	****	****
Sales Volume MT	****	****	****	****
Invent % to Sales Vo	12.40	3.34	3.11	6.74
Indexed Stocks	100.00	31.00	28.71	48.79

It is seen from the above that inventories of the domestic industry reduced till 2001-02. However, inventories increased thereafter. The Authority could not therefore conclusively determine any injury on account of this parameter.

Ability to raise capital investments:

35. Being a multi product company where this product constitutes a small proportion of the total turnover of the company, the Authority does not propose to hold that ability to raise investments could be a conclusive parameter in the injury determination of the domestic industry.

Growth

36. The domestic industry has faced negative growth so far as operations of product under consideration is concerned as production, sales have declined and profits of the domestic industry have declined with respect to subject goods and have now been converted into losses. Following table shows that domestic industry has negative growth in many parameters. However, these declines in the growth parameters would have to be viewed in the larger context of steep decline in the demand of the subject goods.

Year	1999-00	2000-01	2001-02	April 02 – June 03 POI	POI Annualized
Sales	****	****	****	****	****
Index	100	115	114	112	89.7
Profit/Loss before interest	****	****	****	****	****
Index	100	98	148	15.6	12.5
Profit/Loss after interest	****	****	****	(****)	(****)
Index	100	94	165	-9	-7
Production	67889	68986	64363	79071	63256
Index	100	101	94	116	93.2
Cash Profit – merchant sales	****	****	****	****	****
Index	100	104	152	33	34
Market share in Demand- domestic industry	50.37	74.72	65.39	60.24	60.24

It is seen from the above that domestic industry faced negative growth in respect of a number of parameters.

Dumping Margin

37. The dumping margin from the subject countries ranges from 16% to 56% and is considered significant by the Authority.

Conclusion on Injury

38. The Authority notes that the volume of dumped imports of subject goods from subject countries has increased though marginally in the injury period. The share of dumped imports from subject countries in the total imports and in the merchant demand has also increased. The authority further notes that during the period of investigation, the subject goods from subject countries undercut the domestic industry prices when expressed as a percentage of the domestic selling prices of the domestic industry though the margin of price undercutting is not considered significant. It is further noted that there are varying and contradictory indications with regard to different injury parameters. As regards the effect of the dumped imports on the domestic industry, the Authority notes that though the volume of the dumped imports in the total demand has increased, the share of the domestic industry in the total demand has followed a rising trend during the injury period. This is coupled with the fact that the overall demand has been falling during the injury period. However, the other parameters such as profitability and sales prices of the domestic industry show a positive injury to the domestic industry. Overall, the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury.

H Causal Link.

(a) Introduction

39.. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in that industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

(b) Effect of dumped imports

	1999-00	2000-01	2001-02	POI Annualized
Merchant Demand	****	****	****	****
Indexed	100.00	74.95	85.08	72.49
Demand including captive	****	****	****	****
Indexed	100.00	94.15	90.59	88.27
Merchant Sales	****	****	****	****
Trend	100.00	115.09	114.32	89.74
Imports				
Subject Countries	4843	3430	5093	5290
Other Countries	5941	550	1094	765
Average price of dumped imports and Cost of the Production of the Domestic Industry				
	POI 3	POI 2	POI 1	POI
Indexed (Import Price)	100.0	131.2	106.8	117.7
Indexed (COP-DI)	100.0	127.8	103.9	131.3
Domestic Prices	100.0	123.2	108.0	117.3

40 The Authority notes that demand of the subject goods declined between 1999-2000 and 2000-01. However, this decline in demand in 2000-01 did not adversely affect the domestic industry. On the contrary, the domestic industry rather posted higher sales. From 2000-01, demand of the subject goods has not declined and has stagnated, whereas sales of the domestic industry declined. The Authority could not determine causal link between the demand of the subject goods, imports from subject countries and domestic sales.

41. The impact of changes in demand on price parameters was also examined. It was noted that there is no trend in the relationship

between the demand of the subject goods and profits to the domestic industry.

42. The Authority has also examined demand after including captive consumption of the domestic industry. The Authority notes that there is also a decline in captive demand. However, this could not be linked to dumped imports, as the captive consumption of the product is in production of caprolactam whereas the merchant sales are not for production of caprolactam. The captive demand, therefore, is not influenced by the market dynamics of merchant demand. The captive demand could have declined due to alleged dumping of Caprolactam, which is separately under investigation by the Authority.

(c) Effect of Other factors

(a) Performance of Other Domestic producers:

43. There was no other domestic producer during the period under consideration which had made any merchant sales. Another producer M/s FACT Ltd has consumed the entire production for its captive consumption only and therefore their production has not been taken into account in the sales volume of the domestic industry.

(b) Self Inflicted Injury, Economies of Scale & Cost Efficiency:

44. There has been no arguments from any of the interested parties with regards to the Self Inflicted Injury, Economies of Scale & Cost Efficiency. It is noted that the Authority has arrived at the cost of production of the subject goods and its Non injurious price by taking into account actual cost of production of subject goods by verifying the domestic industries data without loading any overheads pertaining to the other business of the company.

(c) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

45. The Authority notes that there is contraction in the overall demand during the period under consideration, which could have been a factor for injury to the domestic industry. Further, there has been a decline in the captive sales of the domestic industry which denotes that the domestic industry is allegedly facing injury on their other products which

could also be responsible for profitability to the domestic industry considering the fact that there has not been a dedicated capacity for the subject goods by the domestic industry and injury suffered on account of the sales of the subject goods by the domestic industry cannot be conclusively attributed to the dumped imports of the subject goods from the subject countries. The Authority could not come across any changes in the pattern of consumption of the subject goods. The Authority therefore, concludes that there is no apparent change in the pattern of consumption.

(d) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

46. Analysis of non-subject imports reveals that such imports have remained at very low level. Moreover, the import prices from some of these sources were very high in the investigation period. Import prices from other sources were lower and comparable to subject countries imports. However, these countries individually commanded less than 3% of import volumes and collectively commanded less than 7% of import volumes. Further, the share of the Non dumped imports from all countries other than subject countries declined in the total demand and also in the share of the total imports. In view of the foregoing, it is noted that imports from non subject countries are considered not to have had any impact on the domestic industry.

(e) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

47. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject countries compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. On the basis of the examination of the transaction wise imports from the subject countries and from the data furnished by the cooperating exporter from subject countries, it appears that the price determines the choice of the supplier as dumped subject goods are like product to the indigenous producer. There is no allegation of trade restrictive practices. It is further noted that the imported product is sold to meet the similar commercial grades and specification as domestically produced subject goods. It is also noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses.

(f) Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry

48. There has been no argument from any of the interested parties with regards to the fact that possible developments in technology could

have been a possible cause of material injury being caused to the domestic industry.

49. Domestic industry is not having exports of the product. Therefore, deterioration in the export performance may not be a possible cause for injury to the domestic industry.

50. As regards improvement in productivity, the authority notes that during the period under consideration, the productivity measures as output per person employed per year increased significantly during the period under consideration. Thus, possible deterioration in productivity is not a cause for injury to the domestic industry..

(g) Conclusion on causation

51. The Authority notes that there is a contraction in the overall demand during the period under consideration, which could have been a factor for injury to the domestic industry. Further, there has been a decline in the captive sales of the domestic industry, which denotes that the domestic industry is allegedly facing injury on their other products, which could also be responsible for decline in profitability of the domestic industry considering the fact that there has not been a dedicated capacity for the subject goods by the domestic industry. With reference to the submissions of the domestic industry following the disclosure statements, the Authority notes that injury and causal link analysis is required to be done for the injury period as a whole for the trend analysis and no specific segmentation could be culled out for imputing or attributing injury to the domestic industry from the dumped imports of the subject goods from the subject countries. It is further noted that the Designated Authority has already recommended anti dumping duty on the downstream product i.e caprolactum which is expected to take care of the injury resulting from the fall in their captive consumption of the subject goods by the domestic industry. While drawing the conclusions on the causal link, the Authority also notes that the domestic industry does not have a dedicated capacity of the subject goods and what is leftover after the captive consumption for the production of caprolactum is diverted to the merchant sales of the subject goods. Therefore, no such causal link is apparent from the dumped imports of the subject goods, sales made by the domestic industry and consequent injury to the domestic industry.

I. Indian Industry interest.

52. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-

establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

53. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. It is noted that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

J. CONCLUSIONS:

54. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- A. The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value.
- B. The Domestic Industry has suffered material injury;
- C. However, the Authority has determined that there is an absence of causal link between the dumped imports of subject goods from subject countries and material injury to the domestic industry

Therefore, no anti dumping duty is recommended with respect to the subject goods from the subject countries in this subject investigation.

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority